RNP
144001 18.09.2015
FFDE 00033611
भारत IN
₹0.25
P686787

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 25
सृष्टि संवत् 1960853116
20 सितम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 25, 17/20 सितम्बर 2015 तदनुसार 4 आश्विन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

उपदेश करने का अधिकारी

–ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः।
वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः।।

–ऋ० ५।६५।१

शब्दार्थ–**यः**–जो **चिकेत**–जाने, ज्ञानी होवे, **वरुणः**–सबसे श्रेष्ठ भगवान् **यस्य**–जिस सुकर्मा ज्ञानी का **दर्शतः**–दर्शनीय है **वा**–और **मित्रः**–सर्वस्नेही भगवान् जिसकी **गिरः**–वाणियों का **वनते**–सत्कार करता है, **सः**–वही **सुक्रतुः**–उत्तमकर्मा हो सकता है, **सः**–वही उत्तम ज्ञानी श्रेष्ठकर्मा **देवत्रा**–देवों के सम्बन्ध में **नः**–हमें **ब्रवीतु**–बोले, उपदेश करे।

व्याख्या–वेद आचार पर बड़ा बल देता है। संसार के सभी मत-पन्थ और सम्प्रदायों के ग्रन्थ विश्वास-ईमान को प्रथम स्थान देते हैं। वेद ही ऐसा धर्मग्रन्थ है, जिसमें ईमान का स्थान तो है, किन्तु प्रधान नहीं। प्रधान स्थान आचार का है। वेद की इस भावना की झलक पौराणिक साहित्य में भी मिल जाती है। एक पुराण में लिखा है–

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः–आचारहीन को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। वेद को तो 'पावमानी'-पवित्र करने वाला कहा गया है और यह पुराण-वाक्य वेद की इस योग्यता का अपलाप सा करता दिखाई देता है। बात क्या है ? इसका भाव स्पष्ट है। ऐसे मनुष्य मिलते हैं, जिन्होंने चारों वेद कण्ठ कर लिए हैं और जो एक-एक मन्त्र का विस्तार से भाव समझा सकते हैं, किन्तु उनका आचार उनके विपरीत है। तब वेद क्या करेगा ? वेद का काम प्रेरणा करना है। मानना न मानना मनुष्य का काम है। इस आशय को समझकर ऋषियों ने कहा– 'आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।'' (मनु० १।१०८) श्रुति-स्मृति में निर्दिष्ट आचार ही मुख्य धर्म है। वेद में आचार को यज्ञ कहा जाता है। वहां यज्ञ को मुख्य धर्म बतलाया गया है।

इस मन्त्र में उपदेश देने के अधिकारी का वर्णन है-उपदेशक में निम्नलिखित गुण होने चाहिएं–

1. **'यश्चिकेत'**-जो जानता हो। जिस पदार्थ का उपदेश करना है, उसका उसे ज्ञान हो। अज्ञानी उपदेश तो भ्रम में डाल देगा। जो जिसे जानता नहीं वह उसका उपदेश क्या करेगा ? किन्तु आज अनेक उपदेशक ऐसे हैं, जिन्हें अपने उपदेश्य विषय का ज्ञान नहीं है।

2. **'सः सुक्रतुः'**-वह सुकर्मा हो। उपदेशक के कर्म श्रेष्ठ होने चाहिएं। ज्ञान के अनुसार उसका आचार-व्यवहार हो। उसके विचारों और आचारों में समता हो, न कि विषमता।' वह अपने विचार के अनुसार कह और कर सकता है।

3. **'वरुणो यस्य दर्शतः'**-वरुण जिसका दर्शनीय-आदर्श हो। जो अपने प्रत्येक कर्म और विचार में भगवान् को समक्ष रखता हो, जिसकी प्रत्येक क्रिया, चेष्टा का लक्ष्य प्रभु-दर्शन हो, जो भगवान् को अपना आदर्श समझता हो। भगवान् को आदर्श मानकर चलने वाला मनुष्य अपने उपदेश में भ्रम या ठगी की कोई बात नहीं कह सकता, क्योंकि भगवान् सदा भ्रमरहित एवं ठगीशून्य है, वह प्राणियों के कल्याण के लिए ही उपदेश करता है।

4. **'मित्रो वा वनते गिरः'**-स्नेहवान् भगवान् जिसकी बात का समादर करता हो। वेद में प्रार्थना है–

सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव। –ऋ० ९।१०४।५

हे प्रभो! तू मित्र है, अपने मित्र के लिए सबसे अधिक ज्ञानी है, अर्थात् तू मित्र की आवश्यकताओं को जानता है। तू उसकी बातें सुनता है और पूरी करता है।

संक्षेप में, उपदेशक में उपदेश्य विषय का ज्ञान, सदाचार ईश्वरनिष्ठा, प्रभु की भक्ति न्यून से न्यून इतने गुण अवश्य होने चाहिएं। इन गुणों से हीन उपदेशक वाह-वाह भले ही प्राप्त कर ले, किन्तु जनकल्याण नहीं कर सकता।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

महर्षि दयानन्द एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) ने प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा से वैदिक आर्ष व्याकरण एवं वैदिक शास्त्रों का अध्ययन कर देश व संसार से अविद्या हटाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान वेदों का प्रचार किया।

उनके वेद प्रचार आन्दोलन का देश और समाज पर ही नहीं अपितु विश्व पर व्यापक प्रभाव पड़ा। वह महाभारत काल के बाद वेदों व वैदिक साहित्य के अपूर्व विद्वान, ऋषि, आप्त पुरुष, वेदों के सत्य अर्थ करने वाले वेदभाष्यकार व शास्त्रकार थे। उन्होंने अपनी अदभुत प्रतिभा से सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ प्रदान किए जो मानव जीवन की सच्ची उन्नति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सहायक हैं। उनके व आर्य समाज के प्रयासों से संसार में अविद्या व अज्ञानान्धकार में काफी कमी आई है परन्तु लक्ष्य अभी कोसों दूर है। वह अपनी उन्नत आर्ष प्रज्ञा के आधार पर संसार के सभी मत-मतान्तरों को वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का सत्यासत्य मिश्रित परिवर्तित रूप मानते थे। उनका विश्वास था कि सभी मतों के विद्वानों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं को जान व समझ लेने पर उन्हें एक वैदिक मत पर स्थिर व सहमत किया जा सकता है। यह बात इसलिए भी सम्भव है कि सृष्टि के आरम्भ में महाभारतकाल के 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 48 हजार वर्षों तक सारे विश्व में एकमात्र वैदिक मत सुस्थापित व सुसंचालित रहा जिससे संसार में सुख व शान्ति स्थापित थी।

मत व सम्प्रदायों की उत्पत्ति का कारण अज्ञान व अविद्या होती है। अज्ञान व अविद्या के दूर होने पर मनुष्य सत्य मत को प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द का ध्यान शिक्षा पद्धति की ओर भी गया था। उनके समय में लार्ड मैकाले द्वारा प्रवर्तित विदेशी राज्य की संपोषक अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कराने वाली तथा अंग्रेजों के नौकर तैयार करने वाली पद्धति प्रचलित थी। यह पद्धति एकांगी व अधूरी शिक्षा पद्धति थी। इसे पढ़कर ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का सत्य-सत्य ज्ञान प्राप्त नहीं होता था तथा आज भी नहीं होता। शिक्षा, विद्या व ज्ञान वह होता है जिससे मनुष्य को अपनी आत्मा, संसार के रचयिता परमात्मा व सृष्टि का सत्य-सत्य ज्ञान प्राप्त हो जिससे वह कृषि, राज्यरक्षा, न्याय व्यवस्था, चिकित्सा, शिल्प व प्रबन्धन आदि कार्यों के संचालन व उन्नति में सक्षम हो सके। इन लक्ष्यों को प्राप्त कराने वाली शिक्षा पद्धति महाभारत काल व पूर्व में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली हो रही है। अत: उन्होंने संस्कृत प्रधान गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का महत्त्व प्रतिपादित किया। यही एक ऐसी प्रणाली है। जिसके द्वारा अध्ययन कर मनुष्य परा व अपरा विद्या सहित अध्यात्म व सांसारिक सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस सर्वांगीण शिक्षा प्रणाली का समर्थन महर्षि दयानन्द ने किया और इसकी रूपरेखा भी अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुत की। यहां यह जानना भी आवश्यक है कि महर्षि दयानन्द वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक मानते थे। वह संस्कृत भाषा व आर्य भाषा हिन्दी के ज्ञान के आग्रही अवश्य थे परन्तु विरोधी वह देश व संसार की किसी भाषा के नहीं थे।

उनका मानना था कि देशवासी संस्कृत और हिन्दी का यथोचित ज्ञान करने के पश्चात् अन्य किसी एक व अधिकाधिक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करें तो कर सकते हैं। यही देश हित में भी है। विश्व में सर्वत्र धर्म व संस्कृति सहित ज्ञान व विज्ञान के प्रचार के लिए अन्यदेशीय भाषाओं का ज्ञान अत्यावश्यक व अपरिहार्य है, यह तथ्य वह भलीभांति जानते थे और इससे उनका असहमत व विरोध होने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। महर्षि दयानन्द का जीवन अत्यन्त व्यस्त जीवन था। उन्होंने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी तथा 30 अक्तूबर, 1883 को विरोधियों द्वारा विषपान कराए जाने से उनका देहावसान हुआ। इन साढ़े आठ वर्षों की न्यून अवधि में उन्होंने धर्म व संस्कृति के प्रचार-प्रसार सहित क्रान्तिकारी व्यापक व अपूर्व समाज सुधार कर देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वस्तुत: स्वतन्त्रता व स्वराज्य के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द ही थे। कुछ समकालीन एवं परवर्ती देशभक्तों द्वारा उनके विचारों का अनुसरण कर ही देश विदेशी दासता से मुक्त हुआ। यदि महर्षि दयानन्द कुछ और समय तक जीवित रहते तो शिक्षा जगत में अपूर्व कार्य करते, महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली वैदिक धर्म, संस्कृति व वैदिक विद्याओं की उद्धारक, पोषक, रक्षक व प्रचारक है। यह शिक्षा प्रणाली प्राचीनतम एवं शुभ परिणामदायक होने से विश्व वन्दनीय है। इसके महत्त्व के कारण इस शिक्षा पद्धति से दीक्षित मनुष्य व ब्रह्मचारी ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप बनता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर, कृष्ण, सभी ऋषि मुनि व महर्षि दयानन्द इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। गुरुकुल का ब्रह्मचारी ईश्वरोपासना सन्ध्या व अग्निहोत्र यज्ञ आदि का जो अनुष्ठान करता है वह ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को अपने जीवन में धारण करने की प्रक्रिया का ही नाम है। अन्य किसी मत में ऐसा नहीं है। इसलिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली संसार की सभी शिक्षा प्रणालियों में सर्वश्रेष्ठ है। गुरुकुल शिक्षा की इस विशेषता के कारण ही हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों व महर्षि दयानन्द ने इस शिक्षा पद्धति को वरीयता दी। इनके बाद श्री जयदेव विद्यालंकार, पंडित हरिशरण सिद्धान्तालंकार, पंडित क्षेमकरण दास त्रिवेदी, पंडित तुलसीराम स्वामी, स्वामी ब्रह्ममुनि, पंडित आर्यमुनि, पंडित शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, पंडित विश्वनाथ विद्यालंकार और डा. रामनाथ वेदालंकार आदि अनेक वेदभाष्यकार इसी शिक्षा पद्धति की देन हैं। इस शिक्षा पद्धति के पोषकों में महर्षि दयानन्द के प्रमुख अनुयायियों में हम स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पंडित गुरुदेव विद्यार्थी, रक्तसाक्षी पंडित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पंडित युधिष्ठिर मीमांसक, पंडित जगदेव सिंह सिद्धान्ती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डा. प्रज्ञा देवी, मेधा देवी, डा. सूर्यदेवी विद्यालंकृता, डा. नन्दिता शास्त्री आदि को भी सम्मिलित कर सकते हैं जिन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचार-प्रसार व संचालन कर उसे यश व सफलता प्रदान की है। महर्षि दयानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से यह अपेक्षा की थी कि इससे अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्त आर्ष व्याकरण प्रणाली समृद्ध होगी जिससे वैदिक धर्म, संस्कृति, वैदिक विद्याओं के पोषक, उद्धारक, रक्षक व प्रचारक मिलेंगे जो ईश्वराज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को पूरा करने में सहयोगी होंगे। महर्षि दयानन्द और वर्तमान में गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की यह अपेक्षा पूर्णत: फलीभूत नहीं हो रही है। अत: यह एक विचारणीय प्रश्न बन गया है।

सम्प्रति आर्य समाज के विद्वानों व सन्यासियों द्वारा देश भर में अनेक गुरुकुल चलाए जा रहे हैं। यहां प्रतिभाशाली ब्रह्मचारी अध्ययन करते हैं जो शिक्षा पूरी कर वेदों के प्रचार व प्रसार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य न चुनकर सरकारी महा-विद्यालयों आदि में अध्यापन व अन्य कार्यों को चुनते हैं। इनमें से बहुत ही कम ऐसे होते हैं जो अपने निजी समय में व्यवसाय के अतिरिक्त आर्य समाज के कार्यों को वरीयता देते हैं। इससे उन्हें तैयार करने में आर्य समाज गुरुकुल के आचार्य व प्रबन्धक आदि जिस स्वप्न को लेकर तप व पुरुषार्थ करते हैं, उसके आशानुरूप सफल न होने से उन्हें उत्साह मिलने की अपेक्षा निराशा मिलती है। होना तो यह चाहिए कि गुरुकुल में दीक्षित सभी स्नातकों व अन्य उच्च योग्यता प्राप्त ब्रह्मचारियों को उचित वेतन व सुख सुविधाओं सहित आर्य समाज में ही सेवा करने का अवसर मिलना चाहिए परन्तु यह हो नहीं पाता। इससे गुरुकुल के संचालकों को निराशा ही मिलती है। हमारे सामने आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डा. जवलन्त कुमार शास्त्री, डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. सोमदेव शास्त्री, डा. वेदपाल जी आदि के उदाहरण हैं जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति से दीक्षित हैं और आर्य समाज के उपदेशक व विद्वान के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। डा. जवलन्त कुमार शास्त्री एवं डा. रघुवीर वेदालंकार ने तो साहित्य सृजन व लेखन के क्षेत्र में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। ऐसे और भी अनेक विद्वान हैं जिनसे आर्य समाज लाभान्वित हैं। अत: गुरुकुल के स्नातक विद्वानों से स्वभाविक रूप से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने व्यवसाय से बचे अपने निजी समय को डा. जवलन्तकुमार शास्त्री तथा उन जैसे जीवित व दिवंगत विद्वानों की तरह आर्य समाज व वैदिक धर्म की सेवा में लगाएं जिससे वैदिक धर्म की बगिया हरी-भरी रहे और वह ऋषि और आर्य समाज के ऋण से उऋण हो सकें। जो लोग ऐसा कर रहे हैं वह प्रशंसा के पात्र हैं। हमें लगता है कि आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की धीमी गति का एक मुख्य कारण गुरुकुल के स्नातकों का अपने जीवन में वैदिक धर्म की सेवा के लिए पर्याप्त समय न देना भी है। हम यह भी उचित समझते हैं कि गुरुकुल के स्नातक चाहे जो भी व्यवसाय कर रहे हों, उन्हें अपनी आय का 5 से 10 प्रतिशत भाग मासिक रूप से गुरुकुल के बैंक खाते में जमा करना चाहिए। गुरुकुलों के दीक्षा समारोहों में जब स्नातकों को उपाधियां वितरित की जाएं, उस अवसर अथवा वेदारम्भ संस्कार के ही अवसर पर इस आशय की प्रतिज्ञा कराई जा सकती है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....✍

हिन्दी दिवस मनाइए, हिन्दी को अपनाइए

प्रतिवर्ष हमारे देश में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि 14 सितम्बर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। स्वाधीनता के संघर्ष के समय हिन्दी के प्रचार को स्वराज्य प्राप्ति के समान ही महत्त्व दिया जाता रहा था और सभी स्वाधीन देश अपना राजकाज अपनी देश की भाषा में करते हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी भाषा सशक्त थी, बेचारी नहीं। इसी के बल पर रावलपिंडी से लेकर ढ़ाका तक स्वतन्त्रता आन्दोलन चला। आजादी के इस महा आन्दोलन में हिन्दी भाषा ने ही देश को जोड़ने का काम किया। आज भी देश के अधिकांश भागों में हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है। इसलिए 14 सितम्बर को संविधान का निर्णय राष्ट्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। इस महत्त्व के कारण इस दिवस को देश भर में विभिन्न संस्थाएं हिन्दी दिवस के रूप में मनाती हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात उम्मीद थी कि हिन्दी भाषा को उसका उचित स्थान मिलेगा परन्तु कुछ विकृत मानसिकता के शिकार लोगों ने स्वतन्त्रता के पश्चात भी हिन्दी भाषा का विरोध किया। संविधान में तो राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया गया परन्तु यह दर्जा वास्तविकता से कोसों दूर है। आज के नेता हिन्दी को छोड़कर अंग्रेजी में भाषण देना अपनी शान समझते हैं। हिन्दी बोलने वाले को अनपढ़ और गंवार समझा जाता है। अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करते हैं। आज आवश्यकता हिन्दी दिवस को मनाने की नहीं, हिन्दी को अपनाने की आवश्यकता है। जब तक हिन्दी भाषा को व्यवहार में नहीं अपनाएंगे तब तक हिन्दी दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस मनाने से इसकी उन्नति नहीं हो सकती।

हिन्दी दिवस को मनाना अनुचित बात नहीं किन्तु केवल इतना करना भी पर्याप्त नहीं। यह बात निर्विवाद सत्य है कि देश की जनता को एकता के सूत्र में बांधने के लिए देश को एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता है। उस रूप में हिन्दी के महत्त्व को वर्षों पूर्व स्वीकार किया जा चुका है। प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाते हुए इस बात का चिन्तन करें कि गतवर्ष में राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति के लिए कौन-कौन से कार्य किए। पिछले वर्ष हिन्दी को समृद्ध बनाने और हिन्दी को व्यवहार में लाने के लिए क्या प्रयास किए, उसमें कितनी सफलता मिली और अगले वर्ष के लिए किस दिशा में कितने प्रयास की आवश्यकता है। इन बातों पर विचार करने से और उस दिशा में कार्य करने से ही हिन्दी भाषा की तरक्की होगी।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। महर्षि दयानन्द जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत में ही भाषण और लेखन कार्य किया करते थे। प्रचार के लिए जब कलकत्ता पधारे तो वहां भी संस्कृत में ही भाषण दिए जिसका अनुवाद दूसरे विद्वान् किया करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। इसके पश्चात भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि की इन भावनाओं और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार, लेखन कार्य, पत्र-पत्रिकाओं और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढ़ावा दिया। इस प्रकार अपने पिछले इतिहास में आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक, सहायक और संरक्षक के रूप में सामने आया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि राष्ट्रभाषा या राजभाषा वही भाषा बन सकती जिसमें निम्नलिखित गुण हों-

जिसे देश के अधिकांश निवासी समझते हो, वह सरल हो, वह क्षणिक या अस्थाई हितों को ध्यान में रखकर न चुनी गई हो, उसके द्वारा देश का परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार सम्भव हो सके और सरकारी कर्मचारी उसे सरलता से सीख सके। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि समस्त भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण विद्यमान हैं।

हिन्दी दिवस के अवसर पर जहां विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों, वहां शासकीय, शैक्षणिक, व्यापारिक क्षेत्रों में हिन्दी के अधिक प्रयोग के विषय में चर्चा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। तभी उस दिन की सार्थकता है। इन चर्चाओं के आधार पर अगले वर्ष के लिए ठोस एवं क्रमबद्ध कार्यक्रम भी बनाएं जाने चाहिए। आज हम हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यकम आयोजित करते हैं, वक्ता हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं परन्तु व्यवहार में परिणाम शून्य है। लोग अपने घरों के बाहर नेमप्लेट अंग्रेजी में लगाते हैं, विवाह आदि कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपवाते हैं, अंग्रेजी बोलने में गौरव अनुभव करते हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम अपने व्यवहार में हिन्दी को नहीं अपनाते। केवल साल में एक बार हिन्दी दिवस मना लेने से हिन्दी का प्रचार नहीं होगा। जिस स्वाधीनता संग्राम को भारतीय भाषाओं ने लड़ा, स्वाधीनता मिलते ही उन्हें दरकिनार कर दिया गया। स्वाधीनता के सारे दस्तावेज ही न केवल अंग्रेजी में हस्ताक्षरित किए गए, बल्कि आधी रात को देश के प्रथम प्रधानमन्त्री ने स्वाधीनता प्राप्ति का पहला भाषण ही अंग्रेजी में दिया गया। यही वह क्षण था, जहां से हिन्दी ही नहीं तमाम भारतीय भाषाओं की बिडम्बना शुरू हुई। स्वाधीनता के पश्चात हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा तो दे दिया गया परन्तु बोल-चाल, व्यवहार और काम-काज में उसे महत्त्व नहीं दिया गया। वर्तमान समय की केन्द्र सरकार ने जब हिन्दी भाषा को महत्व देना शुरू किया तो उसका भी कुछ स्वार्थी और संकीर्ण मानसिकता के शिकार लोगों ने विरोध करना शुरू कर दिया। अगर हम राष्ट्र की उन्नति चाहते हैं तो संकीर्ण मानसिकता को त्याग कर राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाना होगा।

इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि अपने सभी कार्यों में हिन्दी को प्राथमिकता देंगे। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने बड़े भारी मन से यह कहा था कि कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है, न ही राष्ट्रभावना की अभिव्यक्ति कर सकता है। इसलिए हम राष्ट्र की उन्नति और अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को अपनाएं। केवल हिन्दी दिवस मना लेने से हम कर्त्तव्य को पूर्ण नहीं कर सकते। जब से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है तभी से हम हिन्दी दिवस मनाते चले आ रहे हैं परन्तु क्या हिन्दी को वह सम्मान और स्थान प्राप्त है जो उसे राष्ट्रभाषा के रूप में मिलना चाहिए था। अगर हमें वास्तव में अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रेम है तो हमें उसके उत्थान के लिए रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा जिससे हम हिन्दी को उसका गौरव प्रदान कर सके। **-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना में योगीराज श्रीकृष्ण जी का जन्मदिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात श्रीमती रमेश महाजन जी ने गीता पर बहुत सुन्दर भजन सुनाया। पं. रमेश शास्त्री ने अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो भजन सुनाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। भजनों के पश्चात माता जनक रानी आर्या जी ने योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला और श्रीकृष्ण के महान् गुणों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सभी बहनों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। उपस्थिति अच्छी रही और कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

जनक रानी आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

पितृ यज्ञ और पितर की परिभाषा

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से) सारांश

-ले० पंडित उम्मेद विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

मान्यवर! वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता एवं अति आधुनिक भौतिकीकरण के इस युग में सम्पूर्ण मानव समाज के परिवारों के उपेक्षित व्यवहार के कारण 90% वृद्ध अत्यन्त, दुःखी है, और अनुमानित 40% सन्यासी एवं वानप्रस्थियों को मृत्यु की अन्तिम गति की चिन्ता बनी रहती है और 50% उपदेशकों को अर्थाभाव एवं परिवार व समाज की अनदेखी के कारण जीवन का अन्तिम सौपान कैसे गुजरे चिन्ता बनी रहती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमें आगे आना ही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपनी दूरदर्शिता के कारण इस ज्वलन्त समस्या को समझते थे, तभी तो उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के पंच महायज्ञ विषय में सर्वाधिक पांच पृष्ठ पितृयज्ञ और पितर की परिभाषा में लिखे हैं। जिसका सारांश सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः-

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।(य. अ. 19 म. 39)

पितृयज्ञः जिसके दो भेद हैं- एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध उनमें से जिस कर्म को करके विद्वान पुरुष देवऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं सो तर्पण कहाता है तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को श्राद्ध जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए जो प्रत्यक्ष है, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों को प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिए उनकी सेवा नहीं हो सकती। तथा जो उनके लिए कोई पदार्थ देना चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यमानों के ही श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम "तर्पण" और "श्राद्ध" वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करने वाले इन दोनों के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं। सो तर्पण आदि कर्म से सत्कार करने योग्य तीन है देव, ऋषि और पितर।

(पुनन्तु) हे! जातवेद परमेश्वर आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिए और आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं।

अथवा जो कि विद्वान पुरुष कहाते हैं, वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें और आपके दिए विशेष ज्ञान व आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियां पवित्र हो। तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संख्या होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण है। (सत्यमेव) जो कोई सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्यकर्म करते हैं वे देव तथा जो झूठ बोलते हैं, झूठ मानते हैं, झूठ कर्म करते हैं, वे मनुष्य हैं। इसलिए झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना सबको उचित है। इस कारण से बुद्धिमान लोग निरन्तर सत्य ही कहें, माने और करें क्योंकि सत्य आचरण करने वाले देव हैं, वे तो कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान होकर सदा आनन्द में रहते हैं, परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित रहते हैं। इससे सत्यधारी विद्वान ही देव कहलाते हैं।

(ऊर्ज्जवह) पिता व स्वामी अपने पुत्र, पौत्र स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि (तर्पयतमे०) जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान लोग जो अवस्था या ज्ञान से बड़े और मान्य करने योग्य हैं, तुम लोग उसकी (उर्ज०) उत्तम जल (अमृत) रोग नाशक करने वाले उत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो कि जिससे वे प्रसन्न होकर तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे और ऐसा विनय सदा रखो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगों आप हमारे अमृत रूप पदार्थों के भोगों से तृप्त हो जाइए और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें उन-उनकी आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन वचन और कर्म से आप के सुख करने में स्थित है। आप किसी प्रकार का दुःख न पाइए। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्यश्रम में हम लोगों को सुख दिया है वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना चाहिए कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष प्राप्त न हो।

(आयन्तु नः०) पितृ शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा और विद्या से हो सकती है। वैसी किसी दूसरे प्रकार से नहीं। इसलिए जो विद्वान लोग मनुष्यों को ज्ञान-चक्षु देकर उनके अविद्यारूपी अन्धकार के नाश करने वाले हैं, उनको पितर कहते हैं उनके सत्कार के लिए मनुष्य मात्र को ईश्वर की यह आज्ञा है कि वे इन आते हुए पितर लोगों को देखकर अभ्युत्थान अर्थात् उठ कर प्रातिपूर्वक कहे कि आइए-बैठिए, कुछ जलपान कीजिए, और खाने-पीने की आज्ञा दीजिए। पश्चात् जो-जो बातें उपदेश करने योग्य है सो-सो प्रीतिपूर्वक समझाइए कि जिससे हम लोग भी सत्य विद्या युक्त हो के सब मनुष्यों के पितर कहावें। विद्वानों के दो मार्ग होते हैं-एक देवयान दूसरा पितृयान। अर्थात् जो विद्या मार्ग है वह देवयान और कर्मोपासना मार्ग है वह पितृयान कहलाता है। सब लोग दोनों प्रकार के पुरुषार्थ को सदा करते रहें। जो विद्वान लोग कनिष्ट मध्यम और उत्तम चन्द्रमा के समान सब प्रजाओं को आनन्द कराने वाले प्राण विद्या-निधान शत्रुरहित अर्थात् सबके प्रिय पक्षपात छोड़ के सत्य मार्ग में चलने वाले तथा जो कि ऋतु अर्थात् ब्रह्म यथार्थ धर्म और सत्य विद्या के जानने वाले हैं वे पितर लोग युद्धादि व्यवहारों में हमारे साथ होकर अथवा उनकी विद्या दे कर हमारी रक्षा करें।

जो चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम से विद्या पढ़के सबको पढ़ाते हैं उन पितरों को हमारा नमस्कार है। जो चवालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम से वेदादि विद्याओं को पढ़ कर सबके उपकारी और अमृतरूप ज्ञान के देने वाले होते हैं। जो अढ़तालीस वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रियता के साथ सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर हस्तक्रियाओं से भी सब विद्या के दृष्टान्त साक्षात देखकर दिखलाते और जो सबके सुखी होने के लिए सदा प्रयत्न करते रहते हैं। उनका मान भी सब लोगों को करना उचित है।

(पुनन्तु मा पिता महाः) जो पितर लोग शान्तात्मा और दयालु है वे मुझको विद्या दान से पवित्र करें। इसी प्रकार पितामह और प्रपितामह भी मुझको अपनी उत्तम विद्या पढ़ा कर पवित्र करें। इसलिए उनकी शिक्षा को सुनकर ब्रह्मचर्य धारण करने से सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दयुक्त उम्र होती रहे। तथा जहां कहीं अमावस्या में पितृयज्ञ करना लिखा है वहां भी इसी अभिप्राय से है कि जो कदाचित् नित्य उनकी सेवा न कर सके तो महीने-महीने अर्थात् अमावस्या में मासेष्टि होती है, उसमें उन लोगों को बुलाकर अवश्य सत्कार करें।

अध्यापक दिवस मनाया गया

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल के प्रांगण में अध्यापक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल सपरिवार, मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा, कमेटी मैंबर्स श्री सुरिन्द्र जी, डा. मनोहर लाल बांसल, श्री कृष्ण लाल जटाना, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता एवम् स्टाफ तथा बच्चे शामिल हुए। इस समारोह का शुभारम्भ गायत्री मंत्र से किया गया। इस दिन बच्चों ने अध्यापिकाओं के सम्मान में रंगारंग कार्यक्रम पेश किया। कक्षा +2 की छात्राओं ने गीत गाकर, मैनेजमैंट, प्रिंसीपल तथा स्टाफ का स्वागत किया। इस समारोह में छात्रा काजल और ज्योति ने देश भक्ति का गीत गाया। गुरू के महत्त्व पर बहुत ही सुन्दर कविताएं साबिया, सोनल और मिनाक्षी ने सुनाई। कुछ बच्चों ने मनमोहक डांस पेश किया। कक्षा +1 और +2 की छात्राओं ने लोकनाच गिद्धा डालकर सभी का मन मोह लिया। मंच का संचालन श्रीमती चन्द्रकान्ता मैडम ने किया। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता ने बच्चों द्वारा पेश किए गए कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए उनका उत्साह बढ़ाया। बच्चों को बड़ों का सम्मान तथा छोटों से प्यार करने की शिक्षा दी। मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा ने सभी अध्यापिकाओं को अपनी शुभकामनाएं दी और अध्यापक दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने Teacher शब्द का विस्तार से वर्णन किया। स्कूल प्रधान जी की तरफ से सभी अध्यापिकाओं को सम्मानित किया गया। समारोह के अन्त में शान्ति पाठ किया गया।

हानिप्रद सहशिक्षा समाप्त हो

-ले० श्री अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैंट, कौशाम्बी

आज विश्व के प्राय: सब देशों में अनेक प्रकार के मत पंथ चल रहे हैं। यह मत पंथ क्या है ? इस पर जब हम विचार करते हैं तो हम कह सकते हैं कि मत अर्थात् विचार। जिस प्रकार हमारी संसद में हम देखते हैं कि अनेक दलों के प्रतिनिधि इस संसद में बैठते हैं और किस-किस प्रस्तुत विषय पर विचार करते हैं। अपना-अपना सलाह मशवरा देते हैं। अपने मन की बात संसद में रखते हैं। यह जो अपने व्याख्यान के द्वारा अपना सलाह मशवरा रखते हुए जो अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इसे किसी भी संसद का विचार कहा जा सकता है। प्राचीन काल में पूरे विश्व का एक ही मत होता था जिसे धर्म के नाम पर जानते हैं।

जिस प्रकार पूरे विश्व में कभी एक ही मत होता था और उसे वेद कहा जाता था, उस प्रकार ही पूरे विश्व का एक ही पंथ था, जिसे हम वेद पंथ के नाम से जानते हैं क्योंकि विश्व के सब प्राणियों का जन्म परमपिता परमात्मा की इच्छा से हुआ है और इन प्राणियों में बुद्धि के आधार पर मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। इस प्राणी को परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही प्राणी मात्र के कल्याण के लिए ही मत और एक ही पंथ दिया। मत जो विचार कहा जाता है, उस समय वह था वेद मत और जो पंथ था, उसे भी हम वेद पंथ कह सकते हैं। इसका भाव यह है कि उस समय मत और पंथ दोनों समानार्थक थे। इसे ही धर्म के नाम से जाना जाता था किन्तु आज अनेक मत पंथ चल गए हैं, जो अपने आप को धर्म कहते हैं। ऊपर बताया गया है जो विचार का अर्थात् वेद का मार्ग है वही धर्म है किन्तु आज के मत पंथ कहते हैं कि उनके विचार ही धर्म है। इस अज्ञान के कारण ही पंथाधारित लड़ाईयां आरम्भ हुई हैं और यह ही आज के विद्यार्थी के अनुशासन के ह्रास का, नाश का कारण बन रही हैं।

प्राचीन काल में ज्ञान, धर्म, पंथ, मत, यह सब समानार्थक शब्द माने जाते थे। यदि कोई पूछता कि आपका मत क्या है ? तो उसे उत्तर मिलता हमारा मत वेद मत है। जो यह कहता कि उत्तम पथ कौन सा है, उत्तर होता था वेद का पंथ ही उत्तम पंथ है। यदि कोई यह पूछ लेता कि तुम्हारा धर्म क्या है तो उत्तर होता वेद ही हमारा धर्म है और कोई यह पूछ लेता कि तुम्हारी शिक्षा क्या है तो भी वही उत्तर मिलता कि वेद का स्वाध्याय तथा वेद का ज्ञान ही हमारी शिक्षा है। इस प्रकार हमारा जब सब कुछ वेद अथवा वेद के सहायक ग्रन्थ रहे तब तक यह देश निरन्तर उन्नति करता रहा और उन्नति, करते-करते यह देश विश्व गुरु के स्थान पर जा पहुंचा किन्तु ज्यों ही वेदाधारित शिक्षा का लोप हुआ त्यों ही हमारा मत भी बदल गया, पंथ भी बदल गया, धर्म भी बदल गया और शिक्षा भी बदल गई। आज अनेक मत, अनेक पंथ कथित रूप से अनेक धर्म और अनेक शिक्षा की विधियां आ गई है। आज का विद्यार्थी इन सब में उलझ कर रह गया है। उसे समझ ही नहीं आता कि वह किसे ठीक माने और किसे गलत। इस सबके चक्कर में वह अनुशासन नाम की वस्तु को भूल ही गया।

इस सब की रही कमी हमारी सरकार ने पूर्ण कर दी। हमारा जो कुछ सत्य है, उसे हम धर्म कहते हैं किन्तु सरकार ने इस धर्म के शब्द को ही समाप्त कर दिया और धर्म निरपेक्ष शब्द को संविधान में स्थान दे दिया जिससे उसे धर्म का मुखौटा ओढ़ने की आवश्यकता से ही छूट मिल गई। जब इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी का चुनाव अवैध घोषित कर दिया तो उसे त्यागपत्र देना चाहिए था, सरकार से तत्काल रूप से हट जाना चाहिए था, किन्तु उन्होंने त्याग पत्र देने के स्थान पर आपातकाल लगा कर न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध काम किया और अवैध रूप से इस देश पर तानाशाही पूर्ण शासन किया। अपने इस अवैध कृत्य के कारण ही उन्हें हो सकता है कि पश्चाताप रहा हो और इस पश्चाताप की आग का रूप बदलने के लिए बाद में उसने भारतीय संविधान का संशोधन किया और इसमें धर्म निरपेक्ष शब्द जोड़ दिया। इससे उन्हें संतोष हो गया होगा कि उसने जो अवैध कार्य किया, वह कार्य धर्म के अनुसार अवैध हो सकता है किन्तु हमारी सरकार तो धर्म निरपेक्ष है, इसलिए यह अवैध नहीं हो सकता।

ज्यों ही संविधान में धर्म निरपेक्ष शब्द आया त्यों ही देश में धर्म का मानो एक प्रकार से लोप हो गया। अब जो भी कार्य करना हो उसके लिए धर्म अथवा अधर्म की परख की आवश्यकता ही नहीं रही। इसलिए सब अधर्म पूर्ण कार्य करने को यह राजनेता स्वतन्त्र हो गए। इस सबका ही परिणाम है कि नीचे ही नहीं सरकार के ऊपरी स्तर पर बड़े-बड़े घोटाले होने लगे जिनकी कालिख हमारी विगत कांग्रेस सरकार की अधोगति के कारण हमारे सामने है और आज भी यह दल हमारे बहुमत को ठेंगा दिखा रहा है, इस कारण संसद को ही बंधक बनाए हुए है।

इस सबका बुरा प्रभाव हमारे विद्यार्थी पर भी हो रहा है। जो विद्यार्थी मैकाले शिक्षा पद्धति में फंसे होने के कारण उत्तम वैदिक शिक्षा से वंचित हो गया था, उसे भी अनुशासन से दूर जाने का अवसर इस धर्म निरपेक्ष शब्द ने दे दिया। आज के विद्यार्थी का पंथ वेद पंथ नहीं रहा। आज के विद्यार्थी का मत वेद मत नहीं रहा। आज के विद्यार्थी का आचरण भी वेदानुसार नहीं रहा। आज के विद्यार्थी की शिक्षा अर्थात् ज्ञान का साधन वेद का स्वाध्याय नहीं रहा। आज के विद्यार्थी ने आज की राजनीति के अनुरूप चलते हुए धर्म को भी छोड़ दिया। धर्म जो उत्तम मार्ग पर चलते हुए वेद के आधार पर सब प्रकार की उत्तम शिक्षाओं को लेने का सन्देश देता था, वह भी छोड़ दिया। इस सबके साथ ही साथ सिनेमा, दूरदर्शन, आकाश-वाणी के गंदे नग्न चित्रों तथा गीतों के साथ ही साथ नगर के विभिन्न स्थानों पर भी अर्धनग्न चित्रों का प्रयोग हो रहा है। अनेक प्रकार के नशे उसे परेशान कर रहे हैं। इन सबके सेवन से आज का विद्यार्थी कुविचारों से घिरा हुआ है तथा लगातार अनुशासन के विरुद्ध चलते हुए अपने आप को अंधकूप में डाल रहा है।

इस सबका एकमात्र समाधान है धर्म आधारित वैदिक शिक्षा को गुरुकुलों के माध्यम से एक बार फिर से अपनाना। इस शिक्षा को राजाश्रय से मुक्ति दिला कर इसे फिर से वानप्रस्थ व सन्यास के हाथों में देना। यदि इस प्रकार का कार्य हो जाए तो विद्यार्थी शिष्य बन कर गुरु के अंतकरण में निवास करते हुए गुरु का अंतवासी बन जाएगा तथा गुरू के उपदेशों को गुरू के संदेशों को प्रभु आज्ञा मानते हुए उससे मिलने वाली वैदिक शिक्षा को पा कर इस शिक्षा को संसार के कल्याण के लिए प्रयोग करेगा तो स्वयं ही अनुशासन में बंध जावेगा।

आर्य समाज बरनाला में श्रावणी पर्व सम्पन्न

दिनांक 29.9.2015 दिन शनिवार को आर्य समाज बरनाला में श्रावणी पर्व (रक्षा-बन्धन) वैदिक-रीति से मनाया गया। सर्वप्रथम पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात् बरनाला की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्राओं के द्वारा भजन व समयानुकूल भाषण प्रस्तुत किए गए। पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने इस पर्व के महत्त्व को अपने मधुर प्रवचन के द्वारा बताया कि श्रावणी पर्व वेद के प्रचार व प्रसार के लिए हमें प्रेरित करता है। श्री भारत भूषण मैनन, श्री राम शरणदास गोयल एवं श्री राम कुमार सोबती ने इस अवसर पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। वेद प्रचार मंत्री श्री बसन्त शोरी ने अपने वक्तव्य में आर्य समाज के तीसरे नियम को अपनाने के लिए प्रेरित किया। श्री राम चन्द्र आर्य, श्री शिव कुमार बत्ता एवं श्रीमती रंजना मैनन ने अपने सुमधुर भजनों के द्वारा उपस्थित श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। अन्त में आदरणीय प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने अपने धन्यवाद भाषण में सत्य बोलने तथा अपने जीवन के प्रत्येक पहलू को सत्य से जोड़ने के लिए प्रेरित किया। शान्ति-पाठ एवं प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम मन्त्री

आर्य सम्मेलन समारोह

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर के तत्वावधान में 30 अगस्त 2015 को ईश कृपा से बख्शी रिजोर्ट पुतलीघर, अमृतसर में आर्य सम्मेलन सफलतापूर्वक हुआ। इस आर्य सम्मेलन की मुख्य अतिथि श्रीमती सविता दिलावरी जी तथा श्री सत्यम दिलावरी जी ने मंच पर विराजमान होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। इस आर्य सम्मेलन में स्वामी सदानन्द जी, श्री पंडित सत्यपाल 'पथिक,' श्री जगत वर्मा जी, श्री दिनेश आर्य 'पथिक' तथा डा. स्वामी मधुरानन्दा जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पंडित मुरारी लाल जी आर्य तथा पंडित ओम प्रकाश जी शास्त्री ने बड़ी श्रद्धा से वैदिक यज्ञ सम्पन्न करवाया। अल्पाहार के पश्चात माता जगदीश रानी जी के साथ बहिनों ने ईश्वर भक्ति तथा कुमारी साक्षी ने ऋषि महिमा के भजन प्रस्तुत किए। श्रीमती माधुरी, महक ने ओम महिमा तथा श्री नरेन्द्र 'पंछी' जी ने प्रभु भक्ति के भजनों से आनन्दित किया। मंच पर विद्यमान सभी सन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा मुख्य अतिथियों का पुष्प हारों द्वारा स्वागत किया गया। श्री दिनेश 'पथिक' जी ने अपने मधुर भजनों द्वारा जीवन में ईश्वर भक्ति तथा धर्म कर्म करने की प्रेरणा दी। डा. स्वामी मधुरानन्द जी ने अपने ओजस्वी उदबोधन द्वारा सबको आनन्दित किया। तत्पश्चात् श्री वीरेन्द्र कुलदीप 'साथी' ने महर्षि दयानन्द की जय नामक जोशीला भजन सुनाकर श्रोताओं में हर्षोल्लास का शंखनाद किया। आर्य भजनोपदेशक श्री पंडित सत्यपाल 'पथिक' जी ने इतिहास के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाकर आर्य जनता में वैदिक धर्म के प्रति उत्साह व श्रद्धा का रक्त संचार किया। तत्पश्चात वैदिक भजनों के हृदय सम्राट श्री जगत वर्मा जी ने ईश्वर भक्ति, ऋषि महिमा तथा देश भक्ति के भजनों द्वारा श्रोताओं को भाव विभोर तथा मन्त्र मुग्ध कर दिया। स्वामी सदानन्द जी ने अपने ओजस्वी विचार प्रकट करते हुए कहा कि यह आर्य सम्मेलन आर्य समाजों के पदाधिकारियों तथा आर्य बहनों-भाईयों को अच्छे प्रेरणादायक धार्मिक समारोह करने की हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। इस सम्मेलन के अन्तिम चरण में मुख्य अतिथि श्रीमती सविता दिलावरी जी को श्री रमेश रानी ठुकराल ने तथा श्री सत्यम् दिलावरी जी को श्री राकेश मेहरा जी ने शाल, सत्यार्थ प्रकाश, स्मृति चिन्ह तथा वैदिक उतरिया भेंट कर सम्मानित किया। स्वामी सदानन्द जी, स्वामी मधुरानन्दा जी, श्री सत्यपाल 'पथिक' जी, श्री राकेश मेहरा जी, श्री जगत वर्मा जी, श्री सत्यपाल सेठ, श्री दिनेश आर्य 'पथिक' तथा माता जगदीश रानी जी को शाल व वैदिक उत्तरिया भेंट कर क्रमशः श्री सत्यदेव आर्य, श्री सुषमा लूथरा, श्री इन्द्रजीत ठुकराल, श्री देवेन्द्र गुप्ता, श्री नरेन्द्र 'पंछी' पंडित मुरारी लाल आर्य, श्री महेन्द्र धवन, श्रीमती तृप्ता आर्या तथा श्री धर्मवीर जी आदि ने सम्मानित किया। श्रीमती माधुरी व कुमारी महक को स्वामी मधुरानन्द जी ने वैदिक साहित्य व उत्तरिया भेंट कर सम्मानित किया। श्री नरेन्द्र 'पन्छी' श्री कुलदीप शर्मा, श्री सोनी कुमार तथा श्री ओम प्रकाश शास्त्री को उत्तरिया व वैदिक साहित्य प्रदान कर स्वामी सदानन्द जी ने सम्मानित किया।

यह आर्य सम्मेलन श्री सत्यपाल सेठ जी के संरक्षण में सम्पन्न हुआ जिन्होंने आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। इस आर्य सम्मेलन में आर्य समाज शक्ति नगर, नवांकोट, लक्षमणसर, श्रद्धानन्द बाजार, लारेंस रोड, जण्डियाला गुरू, माडल टाऊन, हरीपुरा, दयानन्द बाजार के प्रतिष्टित महानुभाव शामिल हुए। इसके अतिरिक्त स्त्री आर्य समाज लारैन्स रोड, माडल टाऊन, शक्ति नगर, ब्यूटी एवेन्यू, आर्य सदभावना सत्संग समिति की बहनों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और अपना-अपना आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। इस सम्मेलन को सफल बनाने में श्री राकेश मेहरा जी, केन्द्रीय आर्य सभा, आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, श्री इन्द्रजीत ठुकराल, श्री सत्यदेव आर्य, बहन सविता दिलावरी जी, माता जगदीश रानी जी, स्वामी मधुरानन्द जी, श्री सुशील लूथरा जी, श्री धर्मवीर जी आदि का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

पृष्ठ 2 का शेष-महर्षि दयानन्द.....

यह एक प्रकार की इन ब्रह्मचारियों की अपने गुरुकुल के प्रति गुरु दक्षिणा होगी जिससे वह गुरुकुल के ऋण से उऋण हो सकता हैं। गुरुकुल को भी ऐसे अपने पूर्व स्नातकों को प्रबन्ध समिति में सम्मिलित करना चाहिए और उन्हें गुरुकुल की त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट आदि भेजते रहना चाहिए। जो सुझाव उनसे मिलें, उसे प्रबन्ध समिति, विचार कर उचित निर्णय करें। ऐसा होने पर गुरुकुल की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है और गुरुकुलीय शिक्षा का अत्याधिक प्रसार हो सकता है। इसके साथ आर्य समाज के अधिकारियों को भी गुरुकुलों के स्नातकों की समस्याओं पर ध्यान देना होगा। उन्हें अपने पुरोहितों को उचित वेतन के साथ यथोचित सम्मान व उनकी सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिए। यह देवपूजा के अन्तर्गत आता है। यदि इसमें कहीं कुछ कमी व त्रुटि होगी तो योग्य पुरोहित नहीं मिलेंगे। हम आशा करते हैं कि आर्य समाज के विद्वान्, नेता, गुरुकुल के संचालक व स्नातकगण सभी इस पर विषय पर व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से विचार करेंगे और उचित निर्णय कर वैदिक धर्म और आर्य समाज के कार्य को प्रभावशाली रूप से बढ़ाएंगे। हम यह समझते हैं कि समाज में योग्यता, स्वार्थ त्याग व निर्लोभी स्वभाव की भावना का ही सम्मान होता है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों में ऐसे संस्कार भरे जाने चाहिएं। इस उद्देश्य की पूर्ति होने पर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में तीव्रता आएगी।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में योगीराज श्रीकृष्ण का जन्मदिवस बड़े उमंग और उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें मुख्य यजमान पवन बजाज एवं वन्दना बजाज प्रवीन बेकरी वाले थे। पं. शिवा ने पवित्र वेद मन्त्रों से आहुतियां डलवाई। यज्ञ के पश्चात यजमान परिवार को बड़ी आस्थापूर्वक सभी ने आशीर्वाद दिया। इसके बाद आर्य समाज की मधुर भजन गायिका श्रीमती सोनू भारती जी ने भारत की सभ्यता दो नाम याद रखना, एक कृष्ण याद रखना, एक राम याद रखना इस भजन को सुनाकर योगीराज श्रीकृष्ण और मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम की महानता पर प्रकाश ड़ाला। इसके बाद पं. शिवा जी ने योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन की सम्पूर्ण कथा सुनाते हुए उसके जीवन के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण हमारी संस्कृति, सभ्यता के संवर्धक थे। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करने के लिए अर्पण कर दिया। आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य जी ने कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण एक ऐसे महान् व्यक्तित्व वाले महान् पुरूष थे जिनका जीवन चरित्र सभी मनुष्य जाति के लिए प्रेरणादायक है। इसके बाद यजमानों को सत्यार्थ प्रकाश देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री रविन्द्र आर्य, हर्षलखन पाल, ईश्वर चन्द्र रामपाल, सुभाष आर्य, चौ. हरिचन्द जी, भूपेन्द्र उपाध्याय, अश्विनी ड़ोगरा जी, कुबेर शर्मा, बैजनाथ, कैलाश, आशु, मीतू, पन्ना लाल, विजयलक्ष्मी, इन्दु आर्य, अनु आर्या, ओम प्रकाश मैहता, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, ममता, संगीता मल्होत्रा, सुनील मल्होत्रा, राजीव शर्मा, राजीव कुन्द्रा, गौरव आर्य, विमल शर्मा, लवलीन शर्मा, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, रजनी, ललित मोहन कालिया, पवन शर्मा, अमित शर्मा, मीनू शर्मा, राजरानी, मोहन लाल एवं समस्त इलाका निवासी उपस्थित थे। **-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज**

सम्मान समारोह के पश्चात् श्री सत्यदेव आर्य जी ने आर्य सम्मेलन में पधारे सन्यासियों, विद्वानों, आर्य भजनोपदेशकों, भजन गायकों तथा विभिन्न आर्य समाजों से पधारे भाईयों और बहनों का हृदय से आभार अभिव्यक्त किया। इस समारोह में पधारने वाले भाईयों बहनों के मन में वैदिक धर्म के प्रति आस्था में बहुत वृद्धि हुई। शान्ति पाठ व वैदिक घोष के पश्चात् सभी महानुभावों ने ऋषि लंगर प्राप्त किया।

जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया

आर्य समाज धूरी में जन्माष्टमी का पावन पर्व प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर सबसे पहले शैलेश शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ करवाया। आर्य समाज स्त्री आर्य समाज के सभी अधिकारीगण यज्ञ में आहुतियां डाल कर पुण्य का भागी बने और विश्व शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना की। यज्ञ के उपरान्त डा. रामलाल एवं पूर्व प्रिंसीपल आर. पी. शर्मा जी ने महापुरुषों के जन्म दिवस क्यों मनाते। श्री कृष्ण महाराज के जन्म दिन मनाते हुए सभी मानव जाति को बताया और श्री कृष्ण महाराज के पद चिन्हों पर चलने के लिए प्रेरणा दी। कार्यक्रम संचालन आर्य समाज के मन्त्री जी ने बहुत अच्छे ढंग से किया। आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य जी ने उदबोधन करते हुए कहा कि आर्य श्रेष्ठ पुरुषों को कहा जाता है। श्री कृष्ण भगवान एक आप्त पुरुष थे। इस अवसर पर आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल यश चौधरी माडल स्कूल एवं आर्य महिला कालेज छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक, अध्यापिका ने भाग लिया। तीनों संस्था के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। प्रिंसीपल बी. एल. कालिया आर्य स्कूल प्रिंसीपल धर्मदेव जी आर्य कालेज मोनिका यश चौधरी स्कूल एवं आर्य समाज के सदस्य वासुदेव आर्य, डा. सरीन, कर्मचन्द्र जिन्दल अशोक गर्ग, रमेश आर्य, सतीश आर्य, मैनेजर यश चौधरी स्कूल पवन गर्ग मैनेजर आर्य कालेज, कार्यकारिणी प्रधान वीरेन्द्र गर्ग, महाशय सोम प्रकाश प्रधान यश चौधरी स्कूल, अशोक जिन्दल एवं आर्य समाज के अधिकारीगण ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इसके बाद ऋषि प्रसाद वितरण किया गया।

-प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य आर्य समाज धूरी

आर्य समाज नवांशहर द्वारा वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रावणी पर्व पर आर्य समाज नवांशहर द्वारा 29 अगस्त से 5 सितम्बर 2015 तक रक्षाबन्धन से लेकर जन्माष्टमी तक वेद प्रचार एवम् जन सम्पर्क अभियान चलाया गया। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न परिवारों में हवन एवं सत्संग का आयोजन किया गया। दिनांक 29 अगस्त को श्री कुलवन्त राय शर्मा जी के घर सतगुरू नगर सलोह रोड़ नवांशहर में प्रात: 11:00 बजे हवन किया गया। 30 अगस्त को प्रिंसिपल आरती कालिया द्वारा आर्य समाज मन्दिर में वेद प्रचार करवाया गया। 31 अगस्त को डी.ए.एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशुन में हवन एवं सत्संग किया गया। 1 सितम्बर को श्री बलिहार सिंह ने अपने घर विकास नगर राहों रोड़ में सत्संग करवाया। 2 सितम्बर को श्रीमती कुलवंत कौर एम. सी. ने अपने निवास नजदीक पंजाब फोटोस्टेट नवांशहर में वेद प्रचार करवाया। 3 सितम्बर को आर्य समाज नवांशहर में वेद प्रचार का आयोजन किया गया। 4 सितम्बर को दोआबा आर्य सी. सै. स्कूल नवांशहर में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। 5 सितम्बर को प्रो. विकास तेजी ने अपने निवास नजदीक कोल्ड स्टोर कुलाम रोड़ नवांशहर में वेद प्रचार का आयोजन किया। यह सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि आर्य समाज नवांशहर के द्वारा लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान का आयोजन किया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद के रूप में जो अमूल्य ज्ञान हमें दिया है उसका हमें स्वाध्याय करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वेद प्रचार के द्वारा संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाकर ही कुरीतियों, बुराईयों, पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के खिलाफ लडा जा सकता है। श्री अमित शास्त्री जी ने श्रावणी के पर्व पर प्रकाश ड़ाला और उपस्थित जनता को उसके बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वेद का स्वाध्याय ही श्रावणी पर्व का मुख्य उद्देश्य है इसलिए हमें श्रावणी पर्व वेद के स्वाध्याय का व्रत लेना चाहिए और अज्ञान को दूर करना चाहिए। आर्य समाज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने सभी परिवारों एवं शिक्षण संस्थाओं का वेद प्रचार में सहयोग देने के लिए हार्दिक धन्यवाद किया।

-अरविन्द नारद प्रचार मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया

दिनांक 5-9-2015 दिन शनिवार को आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट में जन्माष्टमी पर्व बड़ी श्रद्धा व भक्ति के साथ मनाया गया। प्रात: 8.00 बजे यज्ञ पंडित कमलेश कुमार शास्त्री, पुरोहित के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ किया गया। जिसमें चार यजमान परिवारों ने भाग लिया। मुख्य यजमान मेजर इन्द्र पाल जी कैन्ट, श्री राकेश कुमार जी, श्री पुनीत वर्मा जी, श्री राजीव वर्मा जी ने बड़े ही भक्ति भाव से यज्ञ में आहुतियां अर्पित कीं। यज्ञ उपरान्त सुन्दर भजनों की प्रस्तुति की गई। समराला आर्य समाज से पधारे पंडित राजेन्द्रव्रत शास्त्री जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा श्रोतागणों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। ईश्वर भक्ति, देशभक्ति एवं कृष्ण जी के गीतों के द्वारा शास्त्री जी ने बड़ा ही मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। शास्त्री जी ने कहा कि आज महाभारत के कृष्ण की आवश्यकता है। सरदार भगत सिंह का उदाहरण देते हुए शास्त्री जी ने देश भक्ति के विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कोटकपुरा आर्य समाज के मन्त्री श्री ललित बजाज जी ने उद्बोधन में आर्य समाज के सिद्धान्तों को जीवन में पालन करने का सुझाव दिया और कहा कि मात्र आर्य कहने से जीवन नहीं सुधरता, मीठा-मीठा कहने से मीठे का स्वाद नहीं आता। आर्य समाज फरीदकोट ऋषि दयानन्द के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सत्संगों का आयोजन करता रहता है। आर्य समाज फरीदकोट के मन्त्री श्री सतीश कुमार शर्मा जी के संकल्पानुसार जुलाई 2014 से जुलाई 2015 तक 52 पारिवारिक सत्संगों आयोजन किया गया। जिसमें प्रत्येक परिवार में यज्ञ व सत्संग किया गया। आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर मन्त्री जी ने सभी उत्साह बढ़ाते हुए सभी का धन्यवाद किया।

-आर्य समाज फरीदकोट

आर्य समाज बरनाला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

दिनांक 5.8.2015 दिन शनिवार को आर्य समाज बरनाला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व वैदिक परम्परा के अनुसार श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस पर्व में बरनाला की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक सदस्य, प्रिंसीपल, स्टाफ वर्ग एवं विद्यार्थीगण शामिल हुए। पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री के सुमधुर वेद मन्त्रोच्चारण में यज्ञ किया गया। आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्राओं द्वारा यज्ञ में आहुतियां प्रदान की गईं। तत्पश्चात् श्रद्धेय पुरोहित जी ने योगीराज श्री कृष्ण के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज एवं कालजिएट स्कूल, गांधी आर्य हाई स्कूल व सीनियर सैकंडरी स्कूल, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर, आर्य मॉडल हाई स्कूल के छात्र/छात्राओं ने सुन्दर भजन/प्रवचन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर समाज के वेद प्रचार मन्त्री श्री बसन्त शोरी ने अपने वक्तव्य में योगीराज श्री कृष्ण के मर्यादित कार्यों का उल्लेख किया। महाभारत के दृष्टांतों द्वारा उन्हें एक महानायक, धर्मात्मा, व कर्त्तव्य परायण के रूप में वर्णन किया। श्री भारत भूषण मैनन, श्री राम कुमार सोबती एवं श्री राम शरण दास गोयल ने अपने सम्बोधन में श्री कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित आदर्शों को अपने जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती रंजना मैनन, श्री राम चन्द्र आर्य, श्री शिव कुमार बत्ता ने अवसर अनुकूल सुन्दर-सुन्दर भजन प्रस्तुत किए।

अन्त में सभा अध्यक्ष आदरणीय प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी ने अपने धन्यवाद भाषण में श्री कृष्ण के जीवन सम्बन्धित अमर्यादित घटनाओं का खण्डन किया। वेद एवं धर्म के रक्षक आदर्शवादी जीवन को अपनाने के लिए प्रेरित किया। यह दिन अध्यापक दिवस से जुड़े होने के कारण वेद प्रचार मन्त्री श्री बसन्त कुमार सोरी के करकमलों द्वारा सभी उपस्थित अध्यापक/अध्यापिकाओं को 'व्यवहार भानु' वितरित किया गया। छात्र/छात्राओं को कापियां एवं पैन प्रदान किए गए। शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम

राष्ट्र भाषा देश की सभ्यता और संस्कृति की पहचान: विनोद भारद्वाज

आर्य समाज घास मंडी नवांशहर के तत्वावधान में डी.ए. एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमैन नवांशहर में दिनांक 14 सितम्बर 2015 को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज ने सम्बोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की पहचान होती है। इसके अभाव में राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्र भावना का सकारात्मक अथवा निर्माणात्मक स्वरूप विकसित नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान तो मिला है परन्तु व्यवहार में हम इससे कोसों दूर हैं। हिन्दी का स्थान अंग्रेजी भाषा ने ले लिया है। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम सभी सोशल मीडिया, टिवटर, फेसबुक आदि पर हिन्दी भाषा का प्रयोग करने की शपथ लें। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी देश को आपस में जोड़ने का काम करती है। इस अवसर पर पंजाब विश्वविद्यालय चंण्डीगढ़ के डॉ. गुरप्रीत सिंह तथा पटियाला के डॉ. हुक्म चन्द मुख्य मेहमान के तौर पर उपस्थित थे। डॉ. गुरप्रीत सिंह तथा डॉ. हुक्म चन्द जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी भाषा हमारे राष्ट्र का गौरव है, हमारी सभ्यता का प्रतीक है। हिन्दी भाषा के अन्दर वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक राष्ट्र भाषा के अन्दर होने चाहिए। हमें अपने व्यवहारिक कार्यों में हिन्दी को बढ़ावा देना चाहिए। कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में होने चाहिए। वर्तमान समय में प्रान्तीय भाषाओं के कारण हम एक दूसरे राज्यों के साथ विदेशी जैसा व्यवहार होने लगा है। इसलिए जो सभी प्रान्तों को आपस में जोड़ने का काम करती है वह हिन्दी भाषा ही है। इस दौरान विद्यार्थियों ने सोशल साईट पर हिन्दी भाषा को प्रफुल्लित करने की शपथ भी ली। इस अवसर पर प्रिं. मीनाक्षी शर्मा, आर्य समाज के मन्त्री जिया लाल शर्मा, कुलवन्त शर्मा, प्रिं. आरती कालिया, सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, प्रो. डॉ. संजीव डाबर, प्रो. के.के. गोयल, विकास कुमार तेजी, मीनाक्षी शर्मा, गुरविन्द्र कौर आदि उपस्थित थे।

मंच पर बैठे हुये दाएं से बाएं डा. गुरप्रीत सिंह पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज, डा. हुकम चंद राजपाल पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, प्रो. एस.के. बरूटा, डा. सरोज भल्ला प्रिंसीपल डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन नवांशहर।

-अरविन्द नारद प्रचार मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर जी. टी. रोड़ फिरोजपुर छावनी में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से किया गया जिसे श्री मनमोहन शास्त्री जी के सानिध्य में सम्पन्न किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने हवन में आहुतियां ड़ालकर पुण्य प्राप्त किया। यज्ञ के पश्चात आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं आर्य समाज के सुयोग्य प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने श्रीकृष्ण जी के जीवन की बहुत ही प्रेरणादायक और महाभारत के आधार पर घटनाएं बताई और प्रेरणादायक भजन सुनाएं। आर्य समाज के महामन्त्री श्री मनोज आर्य जी ने श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश ड़ाला और उनके बताए गए मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

वेदवाणी

प्रभो! मैं तो बस तेरा हूं

आ हि ष्मा सूनवे पितापिर्यजत्यापये।
सखा सख्ये वरेण्यः।। -ऋ० १।२६।३

विनय-संसार में पिता पुत्र-वात्सल्य से प्रेरित होकर पुत्र के लिए क्या नहीं करता। बन्धु-बन्धु के लिए जी-जान से पूरी सहायता करता है, श्रेष्ठ मित्र अपने मित्र के लिए सब कुछ अर्पण करने को उद्यत रहता है, परन्तु हे प्रभो! तुम मेरे सब कुछ हो। तुम्हारे होते हुए मुझे किसी वस्तु की कमी क्यों रहनी चाहिए ? तुमसे मेरा जो सम्बन्ध है वह घनिष्ठ, अटूट सम्बन्ध है। तुम्हें मैं किस नाम से पुकारूं ? उस परिपूर्ण सम्बन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। मैं संसार की भाषा में तुझे कभी पिता, कभी बन्धु, कभी सखा पुकारता हूं, परन्तु हे प्यारे! हे मेरी आत्मा! इन शब्दों से मेरा-तेरा वह सम्बन्ध व्यक्त नहीं हो सकता। जब मैं देखता हूं कि तुम मेरे पैदा करने वाले और लगातार पालने वाले हो, तब मैं अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करने के लिए तुम्हें 'पिता-पिता' पुकारने लगता हूं और तुमसे पुत्र-वात्सल्य पाने के लिए रोने लगता हूं। जब मुझे तुम्हारे घनिष्ठ सम्बन्ध की याद आती है उस अटूट सम्बन्ध की जो मेरा संसार में और किसी से भी नहीं है, तब मैं बन्धु भाव में विभोर होकर तुमसे बातें करने लगता हूं और जब देखता हूं कि मैं भी तुम्हारी तरह आत्मा हूं और चेतन हूं, तुम भले ही मुझसे बहुत बड़े 'वरेण्य' हो, तो मैं सखा बनकर तुम्हें 'वरेण्य सखा' नाम से सम्बोधित करता हूं। हे प्रभो! तुम मुझे पुत्र मानो, बन्धु या सखा मानो, कुछ मानो, हर तरह मैं तेरा हूं और तुम मेरे हो। हे मेरे! तो मुझ अपने को तुम कैसे छोड़ सकते हो ? मैं अपूर्ण, अशक्त बालक तेरा हूं, इसलिए मेरी सहायता किए बिना तुम कैसे रह सकते हो ? तुम परिपूर्ण हो, तुम्हें सदा मुझे देते रहने के सिवाय और कार्य ही क्या है ? यही मेरे लिए तुम्हारा यजन है-तुम मुझे देते रहो और मैं लेता रहूं यही तुम्हारी ओर से मेरा यजन है। तुमसे मेरा सम्बन्ध इसी रूप में स्थिर है। बड़ा छोटे को दिया ही करता है, इसलिए मैं क्या मांगू ? मेरी आवश्यकता को समझना और पूरी तरह से पूर्ण करना, तुम स्वयं ही करोगे। हे मेरे देव! तुम स्वयं ही करोगे। बस, मैं तेरा हूं और क्या कहूं। हे मेरे सर्वस्व! हे मेरे सब-कुछ! मैं तेरा हूं।

-वैदिक विनय से साभार

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।